IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय राष्ट्रवादः रबीन्द्रनाथ टैगोर के विचार

डॉ0 अरविन्द कुमार
एसो0 प्रोफेसर–राजनीति विज्ञान
वीरभूमि राजकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, महोबा।

राष्ट्रवादः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

बीसवीं के पूर्वाद्ध में राष्ट्रवाद को लेकर अन्य–अनेक उपनिवेशों से क्रांतिकर नये राष्ट्र विश्व मंच पर अवतरित हो रहे थे, ये नवोदित राष्ट्र राष्ट्रीय हित व सुरक्षा को लेकर नये सिरे से राष्ट्रवाद के सिद्धांत गढ़ने लगे थे। दुसरी तरफ नस्लवाद व राष्ट्रवाद की आड़ में साम्राज्य विस्तार को लेकर साम्राज्यवादी राष्ट्रों द्वारा संघर्ष व रक्तपात का एक ऐसा अराजक दौर प्रारम्भ किया गया जिससे सम्पूर्ण मानवता के लिए ही संकट पैदा हो गया। अतः ऐसे समय में विश्व मानवता के दृष्टिगत् राष्ट्रवाद को पुनः परिभाषित किया जाना आवश्यक हो गया।

रबींद्रनाथ टैगोरः अमेरिका एवम् यूरोपीय राष्ट्रवाद

भारत में रबीन्द्रनाथ टैगोर जैसे विश्वदृष्टि के नेता विश्व मानवता को लेकर अत्यधिक चिंतित दिखते है। अतः जापान, अमेरिका व अन्य पश्चिमी राष्ट्रों की यात्राएं राष्ट्रवाद की पुनर्व्याख्या को लेकर ही की गई। वैसे बीसवी सदी के पूर्वाद्ध की तुलना में आज राष्ट्रवाद के मायने काफी बदल चुके हैं। राष्ट्रवाद के अर्थ व परिभाषा में टैगोर नृजातीय संस्कृतियों और भाषामूलक या धार्मिक समुदायों या राष्ट्रवादी मिथकों की चर्चा न के बराबर ही की है। टैगोर राष्ट्रवाद की परिभाषा करते हुए कहते हैं कि, यह लोगों का राजनीतिक और आर्थिक संघ हैं, उस अर्थ में कि जब समस्त जनता किसी यांत्रिक प्रयोजन से संधटित होने की स्वीकृति दे देती है। इस तरह उनका मुख्य सरोकार संघटन और यांत्रिकता पर दिखता है। जैसे कि पश्चिम का राष्ट्र राष्ट्र–राज्य के मामले में समविस्तृत है, जो कि भौतिक उन्नति में संलग्न जनता का एक यांत्रिक संघटन है अतएव इसका स्वरुप अनिवार्यतः अक्रामक व साम्राज्यवादी होता है। साथ ही टैगोर का प्रौद्यौगिकी व निर्वैयक्तिक नौकरशाही के प्रति अविश्वास होने कें कारण एक अन्य अवसर पर राष्ट्रवाद की परिभाषा (भारतीय स्थिति पर) इसप्रकार करते हैं कि, इस अमूर्त वस्तु राष्ट्र का मतलब भारत पर शासन है, और ब्रिटिश शासन निर्वैयक्तिक व यांत्रिक संघटन का प्रतीक है जो कि, मनुष्य के हाथ के स्पर्श से यथासम्भव दूरी बनाये रखता है। वैसे उनके विचार अध्यात्मिकता और भौतिकवाद, पौर्वात्य व पाश्चात्य, राष्ट्र व अ–राष्ट्र, पुरुषोचित और स्त्रियोचित तथा अमूर्त व वैयक्तिक जैसे परस्पर अंतर्विरोधी विचार तत्त्वों के बीच घूमता रहा है। साथ ही वे इनपर अपने उपाय तलाशते भी दिखते हैं।

जापान यात्रा के दौरान अपने वक्तव्यों में टैगोर जापानी इतिहास व सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान वयक्त करने के साथ ही सर्व–एशिया में अध्यात्मिक मूल्यों की उपस्थिति के ध्यान में रखते हुए ही दिये जो कि पश्चिमी राष्ट्रों के अक्रामक भौतिकवाद की धारणा का विरोधी रहा है।

इधर जापान अपने राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया में भौतिकवादी भूख चरम यांत्रिकता व साम्राज्यवादी हिंसा की राह पर चल पड़ा था जिसपर टैगोर ने कहा कि, जापान को खतरा पश्चिम की खूबियों की नकल करने में नहीं वरन् पश्चिमी राष्ट्रवाद के पीछे काम करने वाली प्रेरक शक्ति को अपना समझ लेने में है। हालांकि टैगोर के इन तर्कों से जापानी समाज सहमत नहीं था, तथा भारतीय राष्ट्रवाद पर जापानी समालोचकों का कहना था कि, भारतीय इतिहास में राष्ट्रवाद के अभाव की टैगोर द्वारा की गई प्रसंशा पराजित लोगों की वकालत करने जैसा है। हालांकि संयुक्त राज्य अमेरिका में टैगोर के राष्ट्रवाद सम्बन्धी विचारों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया रही थी। टैगोर के राष्ट्रवाद सम्बन्धी विचारों के प्रति उत्पन्न असंतोष पर महालनोबिस कहते हैं कि राष्ट्रवाद के प्रश्न पर टैगोर को पूरी तरह गलत समझा गया है, जबकि उन्होने कभी भी राष्ट्रवाद का समर्थन नहीं किया, स्वदेशी आन्दोलन की चरम लोकप्रियता के समय में भी उन्होंने कुछ पक्षों का विरोध किया था।

रबींद्रनाथ टैगोरः भारतीय राष्ट्रवाद

टैगोर के राष्ट्रवाद सम्बन्धी विचार पर प्रशांत महालनोबिस अपने पत्र में सविस्तार स्पष्ट करते हैं कि, टैगोर रचनात्मक कार्यों द्वारा अपने देश की सेवा करने के पक्ष में हैं। इसीलिए उन्होंने ग्रामीण कार्य, सार्वजनिक शिक्षा, सफाई एवं सामाजिक सुधार पर विशेष बल दिया है। उन्हें भारत में विश्वास है, उनकी भावी संभावनाओं तथा उसके महान अतीत में भी। लेकिंन उन्हे राष्ट्रवाद में विस्वास नहीं था। उनकी मान्यता थी कि भारत की महानता मानवीय मूल्यों को स्वीकृति देने तथा सामाजिक सभ्यता का संदेश देने में है। टैगोर का मत है कि विश्व समस्याओं का एकमात्र स्थायी हल अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों के संदर्भ में इस तथ्य को स्वीकार करने में है कि सामाजीकरण इसका एकमात्र निदान है। उन्होंने हमेंशा इस बात पर बल दिया है कि, भारत के विगत इतिहास का हमेंशा से यही संदेश रहा है। वह राजनैतिक स्वतंत्रता को ही लक्ष्य मानने में विश्वास नहीं करते। स्वराज अथवा राजनैतिक स्वतंत्रता के दो उद्देश्य हैं, पहला यह कि इससे प्रगाढ़ समाजीकरण की प्रक्रिया गतिशील होगी जिसके फलस्वरुप भारत का बेहतर व संगठित एकीकरण होगा तथा दूसरा यह कि यूरोप की रक्षा में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहेगा।

टैगोर ने कभी भी राजनीति में दिलचस्पी नही ली। कांग्रेस को सुझाव देते हुए कहते हैं कि कांग्रेस का काम तभी उपयोगी साबित हो सकेगा जब वह भारत के विभिन्न लोगों को नजदीक लाने में सफल हो। इसतरह राजनीति का समाजीकरण ही प्रभावशाली साबित होगा।

टैगोर राजनैतिक वरदानों के बिरोधी रहे हैं तथा राजनीतिक संस्थाओं पर जनमानस की अत्यधिक निर्भरता को पसन्द नहीं करते थे। इस तरह वे राजनीतिक संस्थाओं का न तो बॉयकाट करने में भरोसा करते थे और न ही तरफदारी में। टैगोर शिक्षा, सफाई, शांति और व्यवस्था अथवा न्याय के लिए सरकार का पक्ष लेने व इस हेतु उनपर निर्भर रहने की जरुरत को नकारते हैं। साथ ही वे सरकार की किसी कार्रवाई के लिए उसे कोई महत्त्व देने को अनिच्छुक दिखते हैं। इस संदर्भ में सचेत करते हुए कहते हैं कि, हमारा मस्तिष्क सरकारी प्रभाव से मुक्त होना चाहिए।

यही कारण है कि उन्होंने नरमपंथिता और चरमपंथिता या सहयोग और असहयोग को एक ही कोटि में रखते हैं। इस सम्बन्ध में वे मानते हैं कि ये दोनों ही सरकार के विचार से अविष्ट रहते हैं तथा दोनों ही अपने तरीके की रियायत ही चाहते हैं बस इनके तरीके अलग होते हैं। इसके साथ ही वे मानवता के नाम पर किये जाने वाले समस्त प्रकार के अन्याय का विरोध करते हैं, तथा ऐसी रियायतें बटोरने के लिए व राजनैतिक अस्त्र के रुप में

उसका इस्तेमाल करने के लिए समान नस्ल के होने की भावना पैदा करने के लिए नहीं वरन् इसे अपना मूल कर्त्तव्य मानकर करते हैं। अतः यही कारण है कि टैगोर ने गांधी के असहयोग आंदोलन, विदेशी वस्त्रों को जलाना, स्कूल व कॉलेजों द्वारा असहयोग करने, बॉयकाट व चरखे पर कताई जैसे कृत्यों को अपनी स्वीकृति नहीं दी। साथ ही टैगोर ने स्कूलों व कालेजों द्वारा किये जाने वाले असहयोग को पूर्ण शिक्षा से इतर गैर–शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध होना बताया। जबकि उन्होंने देशवासियों को विदेशियों से भिख न मांगकर निजी प्रयासों से अपने समाज को सुधारने व उन्हें पुनरुज्जीवित करने को प्रेरित किया तथा जाति–धर्म के बन्धनों को तोड़कर कृषि संबन्धी सुधार, समाज कल्याण तथा शिक्षा को लागू करने पर विशेष बल दिया। साथ ही इस बात के प्रति सचेत भी किया कि, सत्ता का मुकाबला प्रति–सत्ता बनाकर नहीं, वरन उपेक्षा करके किया जाना श्रेयस्कर होगा। इस प्रकार टैगोर प्रति–राजनीति के संस्थापक के रुप में ख्याति प्राप्त करते हैं। भारतीय समाज की विशिष्टता के संदर्भ में टैगोर बताते हैं कि, अनेक विदेशी आक्रमणों तथा विजयों के बावजूद भारत में नागरिक समाज एक नैतिक यथार्थ के रुप में सुरक्षित रहा तथा उनके षड़यंत्रों से सवयं को तटस्थ बनाये रखा। इस प्रकार स्वयं को ऐसा वे इसलिए रख पाये क्योंकि उनके घर, खेत–खलिहान, पूजा के मंदिर, उनके विद्यालय जहां उनके विद्यार्थी व शिक्षक सरलता, निष्ठा व ज्ञान के वातावरण में एक साथ रहते थे तथा जहां सरल नियमों व शांतिर्ण प्रशासन के तहत् ग्राम स्वशासन चल रहा था, उनकी सच्ची पहचान थी।

निष्कर्ष

टैगोर कहते हैं कि, समाज का वैसे कोई बाहरी उद्देश्य नहीं होता। यह उद्देश्य ही अपने आप में साध्य है, तथा यह मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने की सहज अभिव्यक्ति है। राष्ट्र व राष्ट्रवाद संबन्धी मत का सबसे बड़ा खतरा यह है कि, यह व्यक्तियों को, अपने निजी इच्छाओं को त्याग कर, अमूर्त राष्ट्रीय इच्छा की अधीनता को मानने को विवश करता है और निर्वैयक्तिक उद्देश्यों के प्रति निष्ठावान बने रहने को नागरिकों का कर्त्तव्य घोषित करता है।

संदर्भ सूची :–

1. खरे,शिरीष; *एक देश बारह दुनिया,* राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 2021।
2. दुबे अभय कुमार; *लोकतंत्र के सात अध्याय,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023।
3. अग्रवाल,पुरुषोत्तम;*संस्कृति, वर्चस्व, और प्रतिरोध,* राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2022।
4. वेल्स,एच0जी0(अनु0 हरिश्चन्द्र पाण्डेय); *विश्व का संक्षिप्त इतिहास,* संवाद प्रकाशन, मेरठ, 2019।
5. पाण्डेय,डॉ0विमल चन्द्र; *भारत वर्ष का सामाजिक इतिहास,* हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, 2018।
6. शर्मा,रामशरण; *शूद्रों का सामाजिक इतिहास,* राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0,नई दिल्ली, 2021।
7. टैगोर,आर0 एन0,(अनु0 सौमित्र मोहन); *राष्ट्रवाद,* नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2011।
8. कृपलानी,कृष्ण;*रबीन्द्रनाथ ठाकुरः एक जीवनी ,* नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, 2020।
9. मुखर्जी,सुजीत;*पैसेज टू अमेरिकाः द रिसेप्शन ऑफ रबींद्रनाथ टैगोर इन द यूनाइटेड स्टेट्स,* 1912–1941, बुकलैंड, कलकत्ता, 1964।
10. अग्रवाल,पुरुषोत्तम(संपादक) एवं पूजा शर्मा (अनु0);*कौन हैं भारत माता? (इतिहास, संस्कृति और भारत की संकल्पना),*राजकमल पेपरबैक्स,प्रयागराज, 2021।
11. थाम्पसन, ई0 जे0;*रबीन्द्रनाथ टैगोरः पोएट एण्ड ड्रेमेटिस्ट,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1948।
12. शंभूननाथ;*भारत की अवधारणाः उत्तर–गांधीय परिदृश्य पर विचार,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020।
13. Puniyani Ram; *Indian Nationalism Versus Hindu Nationalism,* Pharos Media& Publishing Pvt.Ltd, New Delhi,2019.
14. Habib, S. Irfan(edt.); *Indian Nationalism (the Essential Writings),* Aleph Book Company,New Delhi, 2017.

15. Gupta, Uma Das; *Rabindranath Tagore: A Biography*, Oxford University Press, New Delhi,2022.
16. Kothari, Rajni; *The Writings of Rajni Kothari; Politics in India*, *Caste in Indian Politics*, *Rethinking Democracy*, Jointly Published by Orient BlackSwan Private Limited, New Delhi,2016.